This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **3612**

Unique Paper Code : **12051102** **FC**

Name of the Paper : **Hindi Kavita (Adikalin Evam Bhaktikalin Kavya)**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अमीर खुसरो की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

विद्यापति की सौंदर्य-चेतना पर प्रकाश डालिए। 12

2. 'कबीर का वाणी पर जबरदस्त अधिकार था।' विवेचन कीजिए।

अथवा

'मधुमालती' में निहित नख-शिख सौंदर्य का वर्णन कीजिए। 12

3. 'सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिंदी साहित्य जगत् में अनूठा है।' इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

मीरा की प्रेमभावना पर प्रकाश डालिए। 12

P.T.O.

4. 'कवितावली' के काव्य-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

तुलसीदास की भक्तिभावना का वर्णन कीजिए। 12

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी।

मोरे अच्छे निज़ाम पिया-

कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी

जरा बोलो निज़ाम पिया,

पनिया भरन को मैं जो गई थी-

दौड़ झपट मोरी मटकी-पटकी। बहुत कठिन है····

खुसरो निज़ाम के बलि-बलि जाइये

लाज राखे मोरे घूंघट पट की-

अथवा

नंदक नंदन कदंबक तरू-तर, धिरे-धिरे मुरलि बजाव॥

समय संकेत-निकेतन बइसल, बेरि-बेरि बोलि पठाव॥

सामरि, तोहरा लागि, अनुखन विकल मुरारि॥

जमुनाक तिर उपवन उद्‌वेगल, फिर-फिर ततहि निहारि॥

गोरस बेचए अबइत जाइत, जनि-जनि पुछ बनमारि॥

तोहें मतिमान, सुमति, मधूसूदन, बचन सुनह किछु मोरा॥

भनई विद्‌यापति, सुन बरजौवति, बंदह नंद-किसोरा॥ 7

(ख) मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।

जैसें उड़ि जहाज को पच्छी, फिर जहाज पर आवै।

कमल-नैन कौं छाँड़ि महातम, और देव कौं ध्यावै।

परम गंग कौं छाँड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।

जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यौं करील-फल भावै।

सूरदास-प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै॥

अथवा

माई साँवरे रँग राँची।

साज सिंगार बाँध पग घूँघर लोकलाज तज नाँची।

गयाँ कुमत लयाँ साषाँ संगत, श्याम प्रीत जग साँची।

गायाँ गायाँ हरिगुण निसदिन, काल ब्याल री बाँत्ती।

श्याम बिणा जग खाराँ लागाँ, जगरी बाताँ काँची।

मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची। 8

6. निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गये निर्देश के अनुसार किन्हीं **दो** का **रचना-कौशल** विश्लेषित कीजिए : 2×6=12

(क) पांहण केरा पूतला, करि पूजै करतार।

इही भरोसै जे रहे, ते बूड़े काली धार॥

मन मथुरा दिल द्वारिका, काया कासी जाँणि।

दसवां द्वारा देहुरा, तामै जोति पिछाँणि॥ (प्रतीक-योजना)

अथवा

सूते स्याम सेत औ राते। लागत हिएँ निफारे ही जाते।
चपल बिसाल तीख अति बाँके। खंजन पलक-पंख सेउँ ढाँके।
पारधि जनु अगनित जिउ हरे। पौढें धनुक सीस तर धरें।
सनमुख पीन केलि जनु करहीं। कैजनु दुइ खंजन उड़ि लरहीं।
दुवौ नैन जिय के बियाधा। देखत उठै मरै के साधा।
अचिजु एक का बरनौं, बरनत न जाई।
जनु सारंग सारंग तर, निभरम पौढ़े आई॥ (अलंकार-योजना)

(ख) मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा। जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा।
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ। हरष समेत पवनसुत लयऊ॥
कहेहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरनकामा।
दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु। बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु।
मास दिवस महुँ नाथु न आवा। तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा॥
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना। तुम्हहू तात कहत अब जाना।
तोहि देखि सीतलि भई छाती। पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती॥ (वर्णन-कौशल)

अथवा

हेरी म्हा तो दरद दिवाणाँ म्हाराँ दरद न जाण्याँ कोय॥
घायल री गत घायल जाणयाँ, हिबड़ो अगण सँजोय।
जौहर की गत जौहर जाण्याँ, क्या जाण्याँ जिण खोय।
दरद को मारयां दर दर डोल्याँ वैद मिल्या णा कोय।
मीराँ री प्रभु पीर मिटागाँ जब वैद-साँवरो होय॥ (विरह-वेदना)